खेत बचाओ अभियान के तहत किसानों को संतुलित उर्वरक उपयोग एवं पोषक तत्व प्रबंधन की दी जानकारी

बीकानेर, 19 जून 2026। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान (सीआईएएच), बीकानेर के वैज्ञानिकों द्वारा राष्ट्रव्यापी "खेत बचाओ अभियान" के अंतर्गत एमजीएमजी गांवों अम्बासर एवं कीलचू में किसान जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. लाल चंद, डॉ. हनुमान राम एवं डॉ. पवन कुमार तथा कृषि पर्यवेक्षक सुश्री सोनिया शर्मा ने किसानों को कृषि एवं पोषक तत्व प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान कीं। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को संतुलित उर्वरक उपयोग (BUF), एकीकृत पौध पोषक तत्व प्रबंधन (IPNM), प्राकृतिक एवं जैविक खेती, हरी खाद, जैव उर्वरकों एवं वैकल्पिक पोषक स्रोतों के उपयोग, बागवानी फसलों में कुशल पोषक तत्व प्रबंधन तथा मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक प्रयोग के महत्व के प्रति जागरूक करना था।

इस अवसर पर डॉ. लाल चंद ने खेत बचाओ अभियान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए किसानों को वैज्ञानिक अनुशंसाओं के आधार पर संतुलित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि जैविक पोषक स्रोतों के अधिक उपयोग से मृदा स्वास्थ्य में सुधार, फसल उत्पादकता में वृद्धि तथा पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है। डॉ. हनुमान राम ने रासायनिक उर्वरकों के साथ जैव उर्वरकों के समन्वित उपयोग के लाभों की जानकारी दी। उन्होंने बागवानी फसलों में कीट एवं रोग प्रबंधन के लिए जैव नियंत्रण एजेंटों तथा जैविक उत्पादों की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की और किसानों को पर्यावरण-अनुकूल फसल संरक्षण उपाय अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने हरी खाद एवं जैविक पोषक स्रोतों के महत्व पर जोर देते हुए ढैंचा, ग्वार, मूंग तथा अन्य दलहनी फसलों की खेती को मृदा उर्वरता एवं जैविक पदार्थ बढ़ाने तथा रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता कम करने का प्रभावी उपाय बताया। किसानों से संवाद करते हुए डॉ. पवन कुमार ने फसल उत्पादन में जैविक एवं अजैविक दोनों प्रकार के पोषक स्रोतों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि नियमित मृदा परीक्षण से खेत की पोषक तत्व स्थिति का सही आकलन किया जा सकता है, जिससे उर्वरकों का संतुलित एवं दक्षतापूर्ण उपयोग सुनिश्चित होता है। उन्होंने बागवानी फसलों में सतत पोषक तत्व प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों की जानकारी देते हुए किसानों को जैविक खाद, जैव उर्वरक तथा संतुलित उर्वरक उपयोग को अपनाने की सलाह दी।

कार्यक्रम के दौरान किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा पोषक तत्व प्रबंधन से संबंधित अपनी समस्याओं और अनुभवों को साझा किया। संवाद के दौरान यह सामने आया कि संतुलित उर्वरक उपयोग एवं जैविक पोषक स्रोतों के संबंध में तकनीकी जानकारी का अभी भी अभाव है। किसानों ने स्थानीय स्तर पर गुणवत्तायुक्त बीज एवं प्रमाणित रोपण सामग्री की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने की आवश्यकता भी व्यक्त की। कार्यक्रम के अंत में वैज्ञानिकों ने किसानों की जिज्ञासाओं का समाधान किया तथा उन्हें टिकाऊ कृषि एवं मृदा स्वास्थ्य संरक्षण के लिए वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने का आह्वान किया।